प्रेस विज्ञप्ति

राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी

भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम), पुणे में दिनांक 30-31 जुलाई, 2014 के दौरान "जलवायु परिवर्तन, मानसून परिवर्तिता एवं पूर्वानुमान तथा जलवायु सेवाएं: वैज्ञानिक दृष्टिकोण" नामक विषय पर आयोजित राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का उदघाटन 30 जुलाई 2014 को प्रात: 09 बजकर 15 मिनट पर हुआ। इस संगोष्ठी के उदघाटन के अवसर पर डॉ. शैलेश नायक, सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, मुख्य अतिथि तथा सुश्री नीता चौधरी , सचिव, राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय विशिष्ट अतिथि थीं । प्रो. बी. एन. गोस्वामी, निदेशक, डॉ. ए. के. सहाय, वैज्ञानिक एफ, सचिव, राष्ट्रीय सलाहकार समिति तथा डॉ. कौसर अली, वैज्ञानिक ई, सह-अध्यक्ष, आयोजन समिति भी मंच पर उपस्थित थे। डॉ. ओ.एन. शुक्ल, हिंदी अधिकारी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

सुश्री नीता चौधरी (भा.प्र.से.), सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने संबोधित करते हुए कहा कि 'भारतीय उष्णे देशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) द्वारा आयोजित इस तरह का प्रयास विज्ञान को सरल हिंदी में जनमानस तक पहुँचाने का सराहनीय कदम है। इस संगोष्ठी में प्रस्तुत वैज्ञानिक लेखों का सार राजभाषा विभाग को भी प्रेषित किया जाना चाहिए ताकि उसे राजभाषा विभाग के पोर्टल पर एक लिंक के माध्यम से जोड़ा जा सके और देश के दूसरे संगठनों के वैज्ञानिक भी इससे प्रेरित होकर ऐसे हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन अपने- अपने कार्यालयों में करने का प्रयास कर सके। ' डॉ. शैलेश नायक , सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने आईआईटीएम द्वारा की गई वैज्ञानिक उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी को एक उत्कृष्ट कार्य बताते हुए कहा कि यह पहल देश के प्रबुद्ध वैज्ञानिकों के लिए विज्ञान का हिंदी में प्रसार कार्यक्रम के अंतर्गत एक मील का पत्थर साबित होगी । आपने यह भी आश्वासन दिया कि ऐसे हिंदी कार्यक्रमों के आयोजन हेतु मंत्रालय की ओर से हर प्रकार का सहयोग प्रदान किया जाएगा । साथ ही प्रो.बी.एन.गोस्वामी, निदेशक, भारतीय उष्णं देशीय मौसम विज्ञान संस्था न (आईआईटीएम), पुणे ने संबोधित करते हुए कहा कि हमारा संस्थान वैज्ञानिक क्षेत्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में , यह राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी आयोजित की जा रही

है। इस संगोष्ठी के सचिव डॉ .ए.के. सहाय ने कहा कि इस संगोष्ठी के आयोजन में संस्थान के हिंदी अनुभाग के सदस्यों का विशेष योगदान रहा है जिनके अथक प्रयासों से यह कार्यक्रम आज सफलतापूर्वक संपन्न होने जा रहा है।

प्रथम सत्र में जलवायु परिवर्तन नामक विषय के अंतर्गत आईआईटी, भुवनेश्वर के पूर्व-निदेशक प्रो.पी.सी. पांडेय ने 'जलवायु परिवर्तन एवं ध्रुवीय क्षेत्र ' पर, प्रो. आर. रमेश, पीआरएल, अहमदाबाद ने 'अरब सागर में नाइट्रोजन बजट एवं उसका वैश्विक परिवर्तन से संबध', डॉ. रवी भूषण, पीआरएल, अहमदाबाद ने 'पिछले 50,000 सालों के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून में परिवर्तनशीलता बंगाल की खाड़ी के अवसाद नमूनों पर किए गए अध्ययनों का विवरण', तथा डॉ. राजीव निगम, एनआईओ, गोवा ने 'तापमान एवं वर्षा में पिछले 32,000 वर्षों में आए परिवर्तन का आँकिक अध्ययन ' नामक विषयों पर आमंत्रित वार्ताएं प्रस्तुत की।

दूसरे सत्र में 'वायुविलय एवं वायु प्रदूषण पर जलवायु का प्रभाव ' विषय के अंतर्गत डॉ. सच्चिदानंद सिंह, एनपीएल, दिल्ली ने 'वायुमंडलीय वायुधुंध तथा उसकी प्रकाशीय गहराई एवं एरोसोल प्रत्यक्ष विकिरण प्रभाव पर असर', डॉ. रमेश कुमार, 'भारतीय उपमहाद्वीप पर दो प्रकार के अल-नीनो के दौरान विरोधाभासी मानसूनी गतिविधि ', डॉ. क्षेमेन्द्र शर्मा, एनपीएल, दिल्ली ने 'भारत में ठोस अपशिष्ट भराव क्षेत्रों से मीथेन उत्सर्जन एवं दिल्ली के ठोस अपशिष्ट भराव क्षेत्रों की ऊर्जा उत्पादन क्षमता का आंकलन ' एवं डॉ. तारा प्रभाकरन, आईआईटीएम, पुणे द्वारा 'काईपीक्स : मेघों हेतु एक अध्ययन ' नामक विषयों पर आमंत्रित वार्ताएं प्रस्तुत की।

इस संगोष्ठी में हिंदी वैज्ञानिकों के अतिरिक्त गैर- हिंदी क्षेत्र के वैज्ञानिकों ने अपने विषयों पर प्रभावी वक्तव्य प्रस्तुत किए जिससे यह प्रतीत होता है कि विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी का प्रचार-प्रसार बड़ी तीव्र गति से हो रहा है।

इस संगोष्ठी में 65 से अधिक हिंदी में लिखित वैज्ञानिक शोध-पत्र प्राप्त हुए, जिनकी प्रस्तुति पोस्टर एवं अन्य माध्यमों में की गई तथा संगोष्ठी के आगामी छः सत्रों में विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर 24 आमंत्रित वार्ताएं हिंदी में प्रस्तुत की जाएंगी। अंत में डॉ. सहाय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उदघाटन समारोह संपन्न हुआ।